International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

महिला सशक्तिकरण

शोधार्थी,विमला राय

श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

शोध निर्देशक,डॉ रिशिकेश यादव

श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

महिला सशक्तिकरण के मार्ग में अनेक बाधाएं हैं जिसके कारण महिलाएं आज उस मुकाम को प्राप्त नहीं कर पाई हैं जिनके वह हकदार हैं जितनी क्षमताएं और शक्तियां उनमें है उसका समुचित उपयोग आज भी नहीं हो पाया है जबकि भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को चाहे वह स्त्री हो या पुरुष अनुच्छेद 15 लिंग भेद तथा जाति से ऊपर उठकर समानता का मौलिक अधिकार अधिकार प्रदान किया है वहीं अनुच्छेद 4 में राज्य के नीति निदेशक तत्वों के द्वारा शिक्षा के सर्वव्यापी करण का संकल्प लिया गया है संविधान की धारा 45 के द्वारा शिक्षा को निशुल्क तथा अनिवार्य बना दिया गया है इन प्रावधानों का प्रभाव महिला शिक्षा समानता और स्वतंत्रता के साथ सशक्तिकरण पर भी पड़ा है।

फिर भी हमारी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पुरुष ही केंद्र में है और स्त्रियों की इच्छा तथा अन्य को आज भी कोई महत्व नहीं दिया जाता है चाहे वह खानपान हो वेशभूषा हो शादी हो या अपना मनपसंद कोर्स और नौकरी छोड़ने की बात हो इसी कारण समाजवादी नेता डॉ राम मनोहर लोहिया पिछड़े वर्ग के अंतर्गत महिलाओं को भी सम्मिलित करते हैं स्वामी विवेकानंद महिला सशक्तिकरण के पक्षपाती थे इस विषय में उनके विचार इस प्रकार हैं बालिकाओं का पालन पोषण तथा बालकों के समान होना चाहिए।

आज का ऐसा युग है जिसमें महिलाओं को संविधान में कई अधिकार दिए गए हैं आज महिलाएं इस विकासशील भारत को विकसित बनाने के लिए

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

अपना योगदान देती हैं परंतु फिर भी उन्हें कई बार अलग–अलग रूपों में प्रताड़ित किया जाता है तथा उनके अधिकारों का हनन किया जाता है आज हर साल किसी भी परीक्षा में महिलाएं समान रूप से शामिल होती हैं तथा कई बार पुरुषों से अधिक अंक भी लाती हैं परंतु कहीं ना कहीं यह भी सच सच है कि पैतृक सत्ता समाज होने के कारण पुरुषों को ही मान सम्मान दिया जाता हैं।

आज भी कई ऐसे प्रांत हैं जहां बेटियों के होने पर निराशा जाहिर की जाती हैं आज कई महिलाएं जैसे किरण बेदी सुष्मिता सेन पति सुचेता कृपलानी आदि सशक्त हैं इन्हीं की जरा हमें भी सशक्तिकरण करना है तथा इसको कई लोगों तक पहुंचाना है ताकि वह भी महिला सशक्तिकरण का महत्व समझ पाए।

आज लेवल ऐसा प्लेटफॉर्म है जहां महिलाओं की संख्या 60 प्रतिशत है इस तरह के प्लेटफार्म महिलाओं को आत्मनिर्भर तथा प्रेरित करने के लिए सहयोग प्रदान करते हैं।

WOMEN EMPOWERMENT SPEECH IN HINDI मुख्य रूप से महिलाओं को स्वतंत्र बनाने की प्रार्थना को संदर्भित करता है ताकि वे स्वयं निर्णय ले सके और साथ ही बिना किसी परिवारिक या समाजिक प्रतिबंध के अपने जीवन को संभाल सके सरल शब्दों में यह महिलाओं को अपने स्वयं के व्यक्तिगत विकास की जिम्मेदारी लेने का अधिकार देता है सुखी पितृसत्तात्मक समाज में महिलाएं हमेशा से उत्पीड़ित रही हैं।

इसलिए महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य उन्हें पुरुषों के साथ–साथ एक परिवार की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए एक मूलभूत कदम है महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए दुनिया दुनिया निश्चित रूप से समानता का गवाह बनेगी और समाज के हर तबके की महिला को अपनी

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

मर्जी से खड़े होने और अपने इच्छा के अनुसार अपना जीवन चलाने में मदद करेगी।

महिला सशक्तिकरण केवल यह सुनिश्चित करने से अधिक शामिल हैं कि महिलाओं को उनके मूल अधिकार मिले अपने सशक्तिकरण रूप में महिला सशक्तिकरण में स्वतंत्रता समानता के साथ–साथ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पहलू शामिल हैं।

सही समर्थन दिए जाने पर महिलाओं ने हर क्षेत्र में शानदार प्रदर्शन किया हैं भारत में भी हमने महिलाओं को विभिन्न भूमिकाओं में देखा है प्रधानमंत्री अंतरिक्ष यात्री उद्यमी बैंकर और बहुत कुछ इसके अलावा महिलाओं को परिवार की रीत भी माना जाता है घरेलू कामों से लेकर बच्चों के पोषण तक हुए कई जिम्मेदारियां संभालती हैं।

यही कारण है कि वे मल्टीटास्किंग में महान हैं और अक्सर कई कामकाजी महिलाएं ग्रोवर और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के बीच कुशलता से बाजी मारते हैं जहां शहरों में कामकाजी महिलाएं हैं वहीं ग्रामीण क्षेत्रों ने उन्हें घर के कामों में रोक दिया हैं हम एक ऐसे राष्ट्र के रूप में समृद्ध होने की आकांक्षा कैसे कर सकते हैं जहां हर लड़की को शिक्षा या अपनी पसंद की सुविधा ना मिले।

विश्व स्तर पर अपनी संस्कृति और विरासत के लिए प्रसिद्ध भारत विभिन्न संस्कृतियों से भरा हुआ देश हैं लेकिन भारतीय समाज हमेशा से एक पुरुष प्रधान देश रहा है यही वजह है कि नहीं लाओं को शिक्षा और समानता जैसे बुनियादी मानवाधिकार से लगातार वंचित रखा गया है वह हमेशा दमन और धारिता तक ही सीमित रहें और बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने से रोका लैंगिक समानता की धारणा पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता की मांग करती हैं लेकिन महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित रखा

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

गया है भारत जैसे देश के लिए इसके विकास में महिला सशक्तिकरण की बड़ी भूमिका होगी।

जैविक और नैतिक दोनों संदर्भ में महिलाओं के पास एक परिवार के भविष्य और विकास के साथ–साथ पूरे समाज को विकसित करने के लिए अधिक क्षमताएं हैं इस पर का हर महिला को एक व्यक्ति के रूप में पूरी तरह से विकसित होने और अपनी पसंद बनाने में मदद करने के लिए समान अवसर दिए जाने चाहिए महिलाओं को जन्म के बाद से ही समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है अपने अधिकारों सामान समाज की रोडियो और अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ना महिला सशक्तिकरण का अर्थ है शिक्षा के माध्यम से पेशेवर स्तर पर महिलाओं को प्रोत्साहित करना उनकी राय को स्वीकार करना और उनके अधिकार प्रदान करना जो भी चाहे महिलाओं को किसी ऐसे व्यक्ति के सांचे के पीछे नहीं रहना चाहिए जो खुद को अभिव्यक्त ना कर सके।

महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को दूसरे से आगे निकलने और समाज में सम्मान अधिकार प्राप्त करने का मौका देना है महिला सशक्तिकरण की पहली सीधी साक्षरता हैं एक शिक्षित महिला आत्म विश्वासी मुखर और निर्णय लेने में सक्षम होती हैं खासकर भारत जैसे देश में महिला सशक्तिकरण एक समाज से महिलाओं का उत्थान है जो उन्हें लगातार नीचे की ओर खींच रहा है भारत जैसे देश में जहां देवी देवताओं का पूजा की जाती हैं वहीं एक महिला को यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है उसकी आवाज दबा दिया जाता है और घरेलू हिंसा का अगला मामला बन जाता है।

एक पुरूष के प्राप्त अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने को उतारू हो जाता है और एक स्त्री के क्रूरता अन्याय का परिणाम भी सब स्त्रियां उसके आचरण दंड को अधिक भारी बनाए बिना

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

नहीं रहती इस तरह पग पग पर पुरुषों से सहायता की याचना न करने वाली स्त्री की स्थिति कुछ विचित्र सी हैं वह जितनी ही पहुंच के बाहर होती हैं पुरुष उतना ही झूम लाता है और प्रायः यह झुनझुनाहट मिथ्या उपयोग के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं।

हमारी सभी बहनों और बेटियों के लिए हमें अखंडता का वातावरण तैयार करना चाहिए हमें जीवन के हर चरण में अपने फैसले लेने के लिए उन्हें सक्षम बनाने के लिए उनके आत्मविश्वास को बढ़ावा देना चाहिए और इसी तरह हम महिला सशक्तिकरण लाने की दिशा में प्रयास कर सकते हैं।

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023